आरती शाकुम्भरी देवी जी की

हरि ॐ शाकुम्भरी अंबा जी की आरती कीजो,
ऐसो अद्भुत रूप हृदय धर लीजो,
शताक्षी दयालु की आरती कीजो ।।
तुम परिपूर्ण आदि भवानी मां,
सब घट तुम आप बखानी मां ।।
श्री शाकुम्भर...
तुम हो शाकुम्भर, तुम ही हो शताक्षी मां,
शिव मूर्ति माया प्रकाशी मां ।।
श्री शाकुम्भर...
नित जो नर नारी तेरी आरती गावे मां,
इच्छा पूरण कीजो, शाकुंभरी दर्शन पावे मां ।।
श्री शाकुम्भर...
जो नर आरती पढ़े पढ़ावे मां
जो नर आरती सुने-सुनावे मां
बसे बैकुण्ठ शाकुम्भर दर्शन पावे ।।
श्री शाकुम्भर...

विवरण

सदा अपने स्नेह की वर्षा करने वाली शाकुम्भरी देवी जी के सुन्दर रूप को हम अपने मन में बिठाकर उनकी आरती करते हैं । हे शाकुम्भरी माता ! आप सबके हृदय में वास करने वाली हो तथा हर तरह से परिपूर्ण हो ।

हे माँ ! आप शाकुम्भर हो, सौ आँखों वाली हो तथा भगवान शंकर के हृदय में
अपनी माया का प्रकाश फैलाने वाली हो । जो प्रतिदिन आपकी आरती गाते हैं , वो अपनी मनोकामना को पूरा करके आपके दर्शन को पाते हैं

। जो स्त्री एवं पुरुष आपकी आरती को पढ़ते हैं या पढ़ाते हैं अथवा सुनते हैं या सुनाते हैं वो आपके दर्शन को प्राप्त करके स्वर्ग के वासी बन जाते हैं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.